Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED JOURNAL, NOV-DEC, 2018, VOL- 6/48

प्रयोजनमूलक हिंदी की संकल्पना

एच. ए. हुनगुंद , Ph. D.

सहायक प्रोफेसर, भाषाविज्ञान एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

भाषा एक सामाजिक यथाथ है। इसका विकास मानव के सामाजिक जीवन के विभिन्न प्रयोजनों के संप्रेषण के लिए हुआ है। यह सामान्य संप्रेषण नहीं होता वरन् दैनिक जीवन के विभिन्न प्रयोजनों को साधने के लिए होता है। सामाजिक जीवन म इन विभिन्न संदर्भो, स्थितियों और काय-क्षेत्रों म भाषा का प्रयोग होने से उसके कई रूप उभरने लगते ह। वस्तुत: भाषा अपने आप म समरूपी होती है, परंतु प्रयोग म आने से वह विषमरूपी बन जाती है। इन्हीं प्रयोगगत भेदों के कारण कई भाषा भेद दिखाई देते ह। इसका कारण यह है कि मनुष्य का मस्तिष्क इनता सृजनशील होता है कि विभिन्न स्थितियों, संदर्भो और उद्देश्यों के अनुरूप वह भिन्न-भिन्न भाषा शैलियों का प्रयोग करता है और ये शैलियां सामाजिक, सांस्कृतिक और प्रयोजनपरक संदर्भो म नियंत्रित होती ह। इसी संदभ म भाषा के मुख्य रूप से दो पक्ष ह- एक का संबंध मानव की सौन्दयपरक अनुभूतियों के आलंबन से होता है, और दूसरा पक्ष भाषा के प्रयोजनपरक आयामों से जुड़ा रहता है।

'प्रयोजनमूलक हिंदी' म प्रयुक्त 'प्रयोजन' शब्द का कोशीय अथ है, उद्देश्य। प्रयोजनमूलक शब्द अंग्रेजी के फंक्शनल का पयाय है। प्रयोजनमूलक हिंदी का अथ ऐसी विशेष हिंदी जिसका उपयोग किसी विशेष प्रयोजन के लिए किया जाए। प्रयोजनमूलक शब्द हिंदी की उस विशेषता की ओर संकेत कर रहा है, जो हिंदी म किसी विशिष्ट प्रयोजन का उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रयोग स्तर पर वतमान होती है। जिस भाषा रूप का प्रयोग किसी विशिष्ट प्रयोजन की पूर्ति हेतु किया जाता है, उस भाषा रूप को प्रयोजनमूलक भाषा कहा जाता है। फंक्शनल लग्वेज के समानार्थी शब्द के रूप म हिंदी म इस

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शब्द का प्रयोग-व्यवहार बीसवीं सदी के सातव दशक से होने लगा, जिसका तात्पय है – जीवन की विविध, विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रयोग म लाई जाने वाली हिंदी। इसे कामकाजी हिंदी अथवा व्यावहारिक हिंदी भी कहा गया है। डॉ. नगेन्द्र [illegible] प्र[illegible] हिंदी [illegible] हिंदी [illegible] के [illegible] क्ष [illegible] प्र[illegible] क्ष [illegible] केंद्रित [illegible] प्र[illegible] प्र[illegible] हिंदी [illegible] हिंदी [illegible] विविध रू[illegible]

[illegible] प्र[illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] के [illegible] प्र[illegible] के [illegible] प्र[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] व्यवहार क्षेत्र विशाल एवं व्या[illegible] प्र[illegible] क्षेत्र [illegible] [illegible]. ब्र[illegible] '[illegible] हिंदी के मुख्य[illegible]: [illegible] 1. [illegible] 2. एडवांस हिंदी।' [illegible] [illegible]रिक संप्रेषण के लिए प्रयुक्त [illegible] [illegible]-

1. [illegible] हिंदी
2. [illegible] हिंदी
3. प्रौद्योगिकी हिंदी
4. [illegible] हिंदी

प्र[illegible] हिंदी [illegible] विविध रू[illegible] विविध प्रयोगों क्षेत्रों [illegible] प्र[illegible] हिंदी [illegible] [illegible], [illegible]-[illegible], [illegible] विधियाँ, [illegible], [illegible] प्रे[illegible], [illegible],

□ि□□□□, ि□ि□□, □□□□□, □□ि□□, □ज्ञि□□ □□□ □ि□□ि□□ □□□□□ी, ि□ि, □ि□, □□ □□□ □□□-□□□ □ि□ □ प्र□□□ □□□ □□

प्र□□□□□□□ हिंदी □□ □□□ □क्ष□ □, जीविकोपाजन □ विविध क्षेत्रों □ प्र□□□ □□□□□□ □□□-रूपों □□ प्र□□□ □□□□□ □□□□□□□ी □□□ि□□ □□□ □□□ी □ हिंदी □□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□ि□□ □□ □ी □□ि□□ □ □□□□ प्र□□□□, न्□□□, पत्रकारिता, वाणिज्य, □□, ि□ज्ञ□□ □ि□ ि□ि□न्□ क्षेत्रों □ □□ प्र□क□ हो रहा है। हिंदी का भाषा रूप □ी प्र□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ी □□ल्□□□ □ प्र□क्ि□ □□स्□□, ि□□□□स्□□ संदभ के अनुरूप पारिभाषिक शब्दा□□ी □□□ ि□ि□ष्□ □□ि□□ □□□□□ □□□ □□ी □□□ि□□ □□ □□ दृ□ष्□ से प्रयोजनमूलक हिंदी को □□ प्र□ि□□□□ □□ □□ ि□ी □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□, □□ □□□□ □□ □ प्रयोजनमूलक हिंदी की आवश्यकता महसूस की गई। विश्व म विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्र□□-प्रसार के फलस्वरू□ ि□ी □□ □ि□व्□क्ि□ □□□□□□ नवीनतम क्षेत्रों □ □□□□□ □ □□□□ □□□□ आथिक, □□□□ि□□, □□□□□□ □□□ □ज्ञि□□ □□□ी □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ स्थितियों की आवश्यकता के अनुरूप हिंदी के एक ऐसे रूप का उद्घाटन हुआ जो प्रशासन, ज्ञ□-विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों को अभिव्यक□ □□ □क्ष□□□ □□स्□ि□□ □□ □□□

प्र□□□□□□□ हिंदी भाषाविज्ञान की महत्व□□ □□□□ □□प्र□क□ □□□ि□ज्ञ□ □□ अंतगत विकसित अधुनातन बहुआयामी तथा बहुउपयोगी शाखा है। 'प्र□□□□□□□' □ब्□ ि□ी के बहुउद्देशीय प्रायोगिक अनुप्रयुक्त □□□व्□वहारिक पक्ष को द्योतित करता है क्□ि□ □□□□□□□ □ि□त्□ □□□ □□ि□□ ज्ञ□-विज्ञान और प्रशासन आदि के लिए निमित □□□ रूपों □□ स्□ष्□□: □□□-अलग करना बहुत जरूरी है। किसी भी विषय के तकसंगत, □□-□□□ □□□ □□□ि□ि□ष्□ ज्ञान से युक्त जिज्ञासा प्रवृत्ति वैज्ञानिक पद्धति कही जाती है। प्रयोजनमूलक हिंदी संबंधित विषय-□स्□□□ ि□ि□ष्□ तक एवं काय-□□□ □□□ी □□ □श्ि□ नियमों के अनुसार विश्लेषित करती है। इसका मुख्य आधार पारिभाषिक शब्दा□□ी □ी

□□□□□ प्र□□□ □,□□□ विज्ञान के नियमों के अनुसार सार्वभौमिक कहा जा सकता है। विज्ञान की भाषा तथा शब्दावली के अनुरूप ही प्रयोजनमूलक हिंदी की भा□ □□□ □□□□□ □ स्□□□□, □□स्□□□, □□□□-□□□□□ □□□ □□-□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□ □□-□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□की एवं पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग अनिवार्य रूप से □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ता को रेखांकित करता है। प्रयोजनमूलक हिंदी □□□□ □स्□□, □□□□, □□□□□ प्र□□□, □□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□-□□□□□ □ □□स्□□□ □□□स्□□□□ □□□□ □□

□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□व्यवहारिक चेतना का प्रतीक है। सौन्द□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ प्र□□□ □□□□□ □□रू□ □ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ क्षेत्रों म इसके प्रयोजनपरक रूप की आवश्य□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ प्र□□□□□□□ □□□□□ □□ क्षेत्रों म हो गया है। स्वतंत्र भारत के संविधान म हिंदी को राजभाषा का स्था□ □□□□ □□□ □□ □□: □□ □□□-काज की भाषा बन गई है। राजभाषा केंद्रित हिंदी को कामकाजी हिंदी के रूप □ □□□ □□□ □□अब हिंदी की प्रयोजनमूलकता केवल प्रशासन तक सीमित नहीं है। कंप्यू□□ □□ □□□□ □□□□□टर म भी हिंदी के प्रयोग की आवश्य□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ पत्रकारिता के क्षेत्र म हिंदी का प्रयोग स्वतंत्रता के पूर्व से ही आरंभ हो गया था।

□□□□□ □□□□□□ □□□□मों म रेडियो और टेलीविजन के कारण मीडिया लेखन के क्षेत्र म प्रयोजनमूलक हिंदी का निरंतर प्रयोग हो रहा है। यह बात प्रयोजनमूलक हिंदी पर □□□□ रू□ □□लागू होती है। अंग्रेजी के शब्दों म मानक अनुवाद से ही हिंदी की प्रशासनिक □□ □क्षा□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□: हिंदी के प्रयोजनमूलक रूप का विस्ता□ कामकाजी हिंदी, □□□□□□□, □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□. □□□□□□□ □□□□स्□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□प्र□□□□□□□□ □□□ □□03 स्□रू□ □□□□□□ □□□□-

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

1. [illegible] ([illegible])
2. [illegible]ट्री[illegible] ([illegible])
3. [illegible]ट्री[illegible] ([illegible])

[illegible] **हिंदी** [illegible] **समृद्धि** [illegible] **हिंदी** [illegible] **प्र**[illegible]-**क्षेत्र** [illegible]

[illegible] **प्र**[illegible] **हिंदी** [illegible] **प्र**[illegible] **हिंदी** [illegible] **प्र**[illegible] [illegible]क्टे[illegible], [illegible], [illegible], [illegible] **प्रतिष्**[illegible], [illegible] -[illegible] **कायालयों** [illegible] त्री-**पुरुषों** [illegible] **हिंदी** [illegible] **प्र**[illegible] **प्र**[illegible] **हिंदी** [illegible] **ज्ञा**[illegible] **क्ष** [illegible] **प्र**[illegible] **निहित** [illegible] द्[illegible] **ज्ञा** [illegible] **प्र**[illegible] **हिंदी** [illegible] **प्र**[illegible] [illegible] **प्रतिपादित** [illegible] **प्र**[illegible] त्रि[illegible], [illegible] **कायालयों** [illegible] **लिपिकों** [illegible] **प्र**[illegible] **हिंदी** [illegible] **प्र**[illegible] **हिंदी** [illegible]

[illegible] **ग्रं**[illegible]

गोस्वानमी डॉ. कृष्णी कुमार 'प्रयोजनमूलक भाषा और कायालयी हिंदी'**, 1995, **कलिंग प्रकाशन, नई दिल्ली

दीक्षित, प्रो. सूर्यप्रसाद एवं सिंह, डॉ. योगेन्द्र प्रताप 'प्रयोजनपरक हिंदी'**, 2000, **सुलभ प्रकाशन, लखनऊ

भाटिया, डॉ. कैलास चंद्र 'हिंदी भाषा का प्रयोजनमूलक स्वऔरुप'

भट्ट, डॉ. राजनाथ 'प्रयोजनमूलक हिंदी'**, 2004, **हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला

राणा, डॉ. महेन्द्र सिंह 'प्रयोजनमूलक हिंदी के आधुनिक आयाम'

मिश्रा, राजेश एवं शर्मा, राकेश 'प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूप'**, 2005, **तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies